भारत की राष्ट्रपति
श्रीमती द्रौपदी मुर्मु
का
दसवें स्वच्छ सर्वेक्षण पुरस्कार समारोह में सम्बोधन

नई दिल्ली : 11.11.2026

आज इस समारोह में आकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। स्वच्छ भारत मिशन में उत्कृष्ट योगदान देने वाले सभी पुरस्कार विजेताओं को मैं बहुत-बहुत बधाई देती हूं।

यह आयोजन स्वच्छता के क्षेत्र में पिछले एक दशक में शहरों और राज्यों की सामूहिक उपलब्धियों को प्रोत्साहित करने का अवसर है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि इस वर्ष के स्वच्छ सर्वेक्षण की थीम 'स्वच्छता की नई पहल - बढ़ाएँ हाथ, करें सफाई साथ' में सभी की सहभागिता के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की गयी है। यह अत्यंत महत्वपूर्ण प्रयास है क्योंकि किसी एक संस्था के अकेले के प्रयासों से स्वच्छता के लक्ष्यों को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। इसके लिए हर नागरिक, हर घर, हर समुदाय और हर शहर की सहभागिता आवश्यक है।

स्वच्छता केवल सार्वजनिक स्थानों की सुंदर स्थिति का प्रश्न नहीं है। यह हमारे स्वास्थ्य, सामाजिक संवेदनशीलता और प्रशासनिक उत्तरदायित्व का भी परिचायक है। हमारी घरेलू आदतों से भी इसका संबंध है। प्लास्टिक के कचरे के निस्तारण में घरों के स्तर पर भी अतिरिक्त सजगता की आवश्यकता है। हमारी असावधानी से प्लास्टिक गायों और अन्य पशुओं के पेट में जाकर उनकी असमय मृत्यु का कारण बन सकती है।

मुझे यह जानकर संतोष हुआ है कि स्कूलों के पाठ्यक्रम और गतिविधियों में स्वच्छता से जुड़े अनेक आयामों को सम्मिलित करके बच्चों और किशोरों को जागरूक किया जा रहा है। मुझे बताया गया है कि लगभग 3 करोड़ नागरिक पूरे साल अपने शहरों की स्वच्छता के बारे में अपने अनुभव और राय साझा कर सकेंगे। अब नागरिकों, विशेष रूप से हमारे युवाओं, महिलाओं, रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशनों और सामुदायिक संगठनों को इस प्रक्रिया से जुड़ना चाहिए। उनको अपने अनुभवों के साथ ही उन कमियों को भी रिपोर्ट करना चाहिए जिनके समाधान हमारे शहरों को स्वच्छ और स्वस्थ बनाने में मदद कर सकते हैं। इसके माध्यम से नगर प्रशासन और नागरिकों के बीच ऐसा निरंतर संवाद होना चाहिए जिससे विश्वास, पारदर्शिता और जवाबदेही मजबूत हो सके।

देवियो और सज्जनो,

मेरी जनसेवा की यात्रा का आरंभ स्वच्छता के कार्यों से ही हुआ था। मेरा अनुभव रहा है कि इस दिशा में स्थायी परिवर्तन लाने के लिए प्रशासन को नागरिकों के साथ मिलकर कार्य करने की आवश्यकता होती है। साथ ही, सफाई-कर्मियों के जमीनी अनुभवों तथा सुझावों को महत्त्व देना लाभदायक होता है।

अपने आस-पास के इलाकों की स्वच्छता को परखने के लिए नागरिक ही सबसे बेहतर निर्णायक होते हैं। इसलिए नागरिकों के फीडबैक का उपयोग केवल किसी सर्वेक्षण या रैंकिंग तक सीमित नहीं रहना चाहिए। यह फीडबैक नगरपालिका सेवाओं को बेहतर बनाने और स्थानीय चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन होना चाहिए।

देवियो और सज्जनो,

भारतीय जीवन दर्शन ने सदैव प्रेरणा दी है कि किसी एक व्यक्ति या संस्था की उत्कृष्टता तभी सार्थक है जब उसका लाभ औरों को भी मिले। इस दृष्टि से, 'स्वच्छ शहर जोड़ी' पहल ने इस प्रतिस्पर्धा में सहयोग का एक नया आयाम जोड़ा है। स्वच्छता में अग्रणी शहर यदि अन्य शहरों को अपने स्तर तक पहुँचने में सहायता करेंगे तो उपलब्धियाँ सार्थक हो सकेंगी।

मुझे ज्ञात हुआ है कि इस अभियान के साथ ही स्वच्छता के क्षेत्र में वैज्ञानिक अनुसंधान, नवाचार और युवा उद्यमिता को भी समुचित प्रोत्साहन मिल रहा है। हाल ही में, CSIR के सहयोग से पश्चिम बंगाल में स्वच्छता के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी परीक्षण एवं नवाचार के लिए Swachh Bharat Test Bed and Innovation Centre की स्थापना हुई है। यह महत्वपूर्ण संस्थागत पहल है।

मुझे यह भी बताया गया कि शहरी कार्य मंत्रालय ने प्रौद्योगिकी संस्थानों के साथ मिलकर Startups के प्रोत्साहन और मार्गदर्शन की व्यवस्थाएँ भी की हैं। स्वच्छता के क्षेत्र में Startups के अनेक समूह प्रारंभ हो चुके हैं। इस प्रकार से विकसित उद्यमों से स्वच्छता से जुड़ी वास्तविक समस्याओं के समाधान में और रोजगार सृजन में उपयोगी योगदान की संभावनाएँ बढ़ती हैं।

स्वच्छता के क्षेत्र में हमें ऐसी तकनीकें विकसित करनी हैं जो प्रभावी, सस्ती और सुरक्षित हों। ऐसी तकनीकें जो छोटे शहरों की आवश्यकताओं के भी अनुकूल हों। मुझे बताया गया कि इस दिशा में विभिन्न IITs सहित और भी अनेक वैज्ञानिक शोध संस्थान सक्रिय हैं।

देवियो और सज्जनो,

मुझे ज्ञात हुआ है कि इसी सितंबर माह में PRAGATI-50 पहल भी प्रारंभ की गयी है। इसके अंतर्गत 50 शहरों को मॉडल शहरों के रूप में विकसित करने के लिए चुना गया है। दसवें सर्वेक्षण समेत इस प्रकार की पहल के

लिए मैं शहरी कार्य मंत्री श्री मनोहर लाल जी और उनकी समस्त टीम को बधाई देती हूँ।

Tier-2, और Tier-3 शहरों की क्षमताएँ बढ़ाने पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि सबसे तेजी से बढ़ने वाले शहर ये ही हैं। इनकी आवश्यकताएँ और चुनौतियाँ अलग-अलग हैं। एक राष्ट्रीय फ्रेमवर्क के अंतर्गत इनका विकास इनकी विशिष्ट समस्याओं और चुनौतियों के समाधान के लिए होना चाहिए। Tier-2 के नियोजकों को Tier-1 शहरों की वर्तमान समस्याओं से सीखने की आवश्यकता है। इसके लिए उन्हें Tier-1 शहरों के नियोजकों के 20-25 वर्ष पहले के अनुभवों के बारे में जानना उपयोगी होगा।

देवियो और सज्जनो,

स्वच्छता अभियान के पहले दशक ने देश में जन-जागरूकता, जन-भागीदारी और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की सुदृढ़ नींव रखी है। मैं आशा करती हूँ कि सब की सहभागिता से स्वच्छ सर्वेक्षण के इस अगले दौर में पहले दशक की उपलब्धियों को वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित परिणामों में बदला जा सकेगा। इस अभियान का लाभ छोटे-बड़े शहरों के प्रत्येक नागरिक तक पहुँचेगा। स्वच्छता में अग्रणी शहर दूसरे शहरों की प्रगति में सार्थक सहयोग करेंगे और युवा प्रतिभाएँ शहरों की वास्तविक समस्याओं के समाधान प्रस्तुत करेंगी।

मुझे विश्वास है कि नगर निकाय, नागरिक और विशेषज्ञ समुदाय, सब मिलकर अपने नगरों को ऐसे विकसित करेंगे कि वे स्वच्छ दिखेंगे और स्वस्थ बनेंगे। साथ ही, वे पर्यावरण संरक्षण और सुशासन के उत्कृष्ट उदाहरण बनेंगे।

आप सबको मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

धन्यवाद!

जय हिन्द!

जय भारत!